तृतीय अध्याय
'अन्ततः' उपन्यास के पात्र और चरित्र चित्रण'

: तृतीय अध्याय :

"अन्ततः" उपन्यास के पात्र और चरित्र-चित्रण।

३.१ चरित्र-चित्रण का स्वरूप :-

उपन्यास का मुख्य विषय मानव जीवन है। उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द ने उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र माना है, क्योंकि चरित्र में ही मनुष्य के व्यक्तित्व के दर्शन होते है। उपन्यास में मानव चरित्र का ऐसा विश्लेषण होना चाहिए जिससे पात्रों में सजीवता, स्वाभाविकता और सहजता आ पाये ताकि वे न तो अलौकिक दिखाई पडें और न ही असाधारण।

डॉ.भगीरथ मिश्र के अनुसार, "उपन्यास के पात्र उपन्यास के चरित्रों जैसे ही न लगकर जीवन में देखे, सुने और सम्पर्क में आये व्यक्तियों के समान लगते हैं और उनके साथ ममता, घृणा, द्वेष, सौहार्द, करूणा आदि के भाव स्वतः जगने लगते हैं तो समझिये कि उपन्यास में सफल चरित्र-चित्रण हुआ।"[१]

उपन्यास के पात्र अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व के साथ अपनी चारित्रिक विशेषताओं के अनुकूल कार्य करते हुए स्वतन्त्र गति से अपना विकास करनेवाले हो। जिन पात्रों से उपन्यास के कथानक का मुख्य रूप से सीधा सम्बन्ध रहता है जो कथानक को गति देते है या उससे विकास पाते है उन्हें "प्रधान" या "प्रमुख" पात्र कहा जाता है। जिन पात्रों से कथानक का सीधा सम्बन्ध नहीं होता और जो उपन्यास में प्रधान पात्रों के साधन बनकर उपस्थित होते हैं उन्हें "गौण पात्र" कहा जाता है। यह पात्र स्थिर और गतिशील दो प्रकार

---

१. डॉ.भगीरथ मिश्र : "काव्यशास्त्र" - पृ.सं - ७९

12942
A

प्रकार के होते है। पात्रों का चरित्र-चित्रण विश्लेषणात्मक या नाटकीय ढंग से किया जाना चाहिए। इन पात्रों के आकार-प्रकार, रंग-रूप, आचार-विचार, रहन-सहन, कार्य कलाप, संवेदनशीलता, भावुकता, सहृदयता, उदारता, मानसिक संघर्ष, बुध्दि-चातुर्य आदि व्यक्तिगत तथा चारित्रिक गुण देखे व परखे जाते हैं, जो उपन्यास को रोचक, सजीव और रमणीय बनाये रखते हैं।

३.२ चरित्र-चित्रण का महत्व :-

कथानक संगठन का प्रधान उद्देश्य चरित्र-चित्रण है। इसी कारण कथा-साहित्य में इसकी अनिवार्यता अपना विशेष महत्व रखती है। उपन्यास में वस्तुयोजना के बाद पात्रों की योजना एवं उनके चरित्रांकन का सर्वाधिक महत्व माना जाता है। वस्तुतः उपन्यास की वस्तुयोजना ही जीवन और समाज से सम्बन्धित विशिष्ट रूचियों, प्रवृत्तियों एवं स्वभाववाले पात्रों के चारित्रिक उद्घाटनों के आधारपर हुआ करती है। वे पात्र व्यक्ति भी हो सकते हैं और समष्टि के प्रतिनिधि भी। इन पात्रों द्वारा ही उपन्यासकार जीवन का अध्ययन और उसकी अनुभूतियों को चित्रित करना चाहता है। अतः कथावस्तु की भाँति चरित्र-चित्रण भी उपन्यासकार की महत्ता का द्योतक होता है।

३.३ "अन्ततः" के पात्र :-

"अन्ततः" पूर्णरूप से नारी के अन्तर्द्वन्द्व और उसके निर्णय की वस्तुपरक कथा है। इसके साथ ही इसमें स्त्री-पुरूष सम्बन्धों की जटिलता को महानगरीय परिवेश में अत्यन्त कलात्मक ढंग से चित्रित किया है। उपन्यासकार ने व्यक्तिवादी स्तरपर पात्रों के आन्तरिक द्वन्द्वों का सुक्ष्म और विस्तृत वर्णन किया है। उन्होंने जिन पात्रों का चित्रण किया है उन्हीं के माध्यम से वे उपन्यास के उद्देश्य तक पहुँचने में सफल हुए हैं। अतः पात्रों के सही चरित्रांकन के लिए सभी पात्रों को निम्नलिखित वर्गों या कोटियों में विभाजित किया जाना चाहिए -

१. प्रधान पात्र - वसुधा, पंकज पसरीचा।

२. विरोधी पात्र - राघवन।

३. सहायक पात्र - शालिनी, सुभाष

४. गौण पात्र - एन्ड्रयूज, अतुल, पद्मा, दानसिंह, अविनाश।

चरित्र-चित्रण की दृष्टि से इन पात्रों को दो कोटियों में स्वीकार किया जाता है। स्थिर पात्र और गतिशील पात्र।

(क) **स्थिर पात्र** :- जो पात्र आद्यान्त एक जैसे बने रहते हैं। किसी भी देशकाल, वातावरण, परिस्थिति और मौसम में जिनके चरित्र में कोई भी परिवर्तन परिलक्षित नहीं होता वह स्थिर पात्र है। उदा- पंकज पसरीचा।

(ख) **गतिशील पात्र** :- जिन पात्रों के जीवन में देशकाल, वातावरण और परिस्थितियों के अनुसार सहज-विकसित या आकस्मिक रूपमें परिवर्तन आता है उन्हें गतिशील चरित्रवाले पात्र कहा जाता है - उदा.शालिनी आदि पात्र।

(ग) **स्वरूप के आधारपर** :-

(१) आदर्शवादी पात्र :- इस उपन्यास में पंकज पसरीचा आदर्शवादी पात्र है। इंदिरा एक्सप्रेस के संपादक पसरीचा गम्भीर, शान्त स्वभाववाले और सम्पादन कार्य में दक्ष हैं। उनके विचारों में नैतिक आदर्शों की झलक मिलती है।

(२) व्यक्तिवादी पात्र :- इस उपन्यास का हर पात्र व्यक्तिवादी दिखाई देता है। पात्रों के द्वन्द्व, तनाव, समस्याएँ, लगाव, उलझन सब व्यक्तिपरक है। पसरीचा का व्यक्तित्व प्रखर एवं प्रभावशाली है। अन्य पात्र भी सशक्त है जिनमें कुछ दुर्बलताएँ भी पायी जाती है।

(३) प्रतीकात्मक पात्र :- इस उपन्यास में पंकज पसरीचा नैतिक आदर्श का प्रतीक है, राघवन स्वार्थ एवं वासना का प्रतीक है। शालिनी व्यावहारिक बौध्दिक जीवन का प्रतीक है, वसुधा आधुनिक शिक्षित नारी का प्रतीक है, तथा सुभाष आज की युवा पीढ़ी के नये विचारों का प्रतीक है।

(४) मनोविश्लेषणात्मक पात्र :- इस उपन्यास में देवेशजी वसुधा और पसरीचा के मानसिक द्वन्द्व को अत्यंत मार्मिकता के साथ विश्लेषण करने में सफल हुए हैं।

(५) सामाजिक पात्र :- इस उपन्यास के सभी पात्र मध्यवर्गीय जीवन जी रहे सामाजिक पात्र है।

इसप्रकार डॉ.देवेशजी ने इस उपन्यास में चरित्र-चित्रण के लिए कुछ विधियाँ अपनायी हैं, जिनमें प्रमुख हैं - संवादात्मक, विश्लेषणात्मक, मनोविश्लेषणात्मक, आत्मकथात्मक आदि का प्रयोग कर लेखक ने पात्रों की मनस्थितियों को एवं उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। इसी आधारपर हम "अन्ततः" के पात्रों के चरित्र की विशेषताएँ देखेंगे -

"अन्ततः" - उपन्यास के प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण। -

३:३:१ वसुधा :-

"अन्ततः" की प्रमुख स्त्री पात्र एवं नायिका वसुधा है, वह आधुनिक युग की शिक्षित, नौकरीपेशा तथा संस्कारक्षम नारी है। उसके चरित्र की निम्न विशेषताएँ दृष्टव्य हैं -

३:३:१:१ आधुनिक मध्यवर्गीय नारी :-

उपन्यास की नायिका वसुधा आज की शिक्षित एवं आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती है। "उसका वर्ग एक सामान्य मध्यवर्गीय क्लर्क पिता का वर्ग है।"[१] मध्यवर्गीय आम जीवन जीनेवाली वसुधा अतुल नामक उच्चवर्गीय युवक के साथ प्रेमविवाह कर लेती है। उच्चवर्ग जिसके संस्कार तथा परिवेश, मध्यवर्ग से मेल नहीं खाता और यही कारण है उसके विवाह-बन्धन टूटने का। विवाह विच्छेद के बाद वसुधा "इन्दिरा एक्सप्रेस" में पत्रकार की नौकरी कर आर्थिक रूप से स्वावलंबी तो होती है लेकिन उसे अनेक मानसिक

---

१. डॉ.देवेश ठाकुर : "अन्ततः" - पृ.सं.६४

यातनाओं से गुजरना पड़ता है। वह अपने बेटे अविनाश को जो अतुल और वसुधा के टुटे हुए रिश्ते का प्रतीक है उसे दूर बोर्डींग स्कूल में भरती करवा कर स्वयं "वर्किंग वीमन्स हॉस्टल" में रहती है। प्रेम विवाह की असफलता उसे इस पुरूष प्रधान समाज में अनेक अवसरों पर एक ऐसे चौराहे पर खड़ा कर देती है जहाँ वह अनिर्णय की स्थिति में लगातार मानसिक पीड़ा और अनिश्चय का शिकार होती है। एक ओर उसे भारतीय परिवेश में पले-बढ़े संस्कार कोई निर्णय लेने और आगे बढ़ने से रोकते हैं, तो दूसरी ओर वह अपने निपट एकाकीपन और पुरूष की लोलुप दृष्टि दोनों से आहत होती चलती है और उसके अन्तर्मन में भरा खालीपन उसे सही पुरूष की तलाश में भटकाता फिरता है।

३:३:१:२ स्वतंत्रता प्रेमी नारी :-

वसुधा आज की शिक्षित नारी वर्ग की प्रतिनिधि चरित्र है, जिसमें आर्थिक स्वावलम्बन दृढ़ हुआ है और वैयक्तिक स्वतंत्रता का भाव गहराया है -

३:३:१:२:१ व्यक्तिगत स्वतंत्रता :-

वसुधा स्वतंत्रता प्रेमी नारी है जो अपनी मर्जी से अतुल से शादी करती है, लेकिन अतुल का ऐश्वर्य जो इन्सान को मशीन बना देता है, जिससे विरक्त होकर वह स्वयं अपनी ही मर्जी से शादी के बंधन को तोड़ देती है। वह अतुल के साथ पूरे समर्पण भाव से रहना चाहती है लेकिन, अतुल शादी के बाद अपने व्यवसाय में इतना व्यस्त रहता है कि, वसुधा के लिए समय नहीं दे पाता उसका सारा समय सरकारी दफ्तर, होटल और नाइट क्लब में जाता है। वसुधा खाली रह जाती है और इसी खालीपन को भरने के लिए वह विश्वविद्यालय में पत्रकारिता का कोर्स ज्वाइन कर लेती है, जिससे उसे बडी राहत मिलती है। अतिरिक्त सुविधाओं के प्रति उसका मोह टूट जाता है। वह स्वयं भी अपने को अतुल से तटस्थ बनाने की कोशिश करती है लेकिन उसके अंदर भरा खालीपन और सुनापन उसके अकेलेपन को बढ़ाता चलता है,- "अब आए दिन या तो अतुल देर रात को घर लौटता या घर में पार्टियाँ होती। पार्टियों में बिजनेस की बातें चलती या राजनीति की....। और यह क्रम दिन-ब-दिन बढ़ता गया। वसुधा इन पार्टियों में नुमाइश की वस्तु बनकर रह गयी या मेहमाननवाजी का साधन।"[१]

---

१. डॉ.देवेश ठाकुर : "अन्ततः" - पृ.६५

वसुधा को पहले तो यह सब अच्छा लगता था फिर इस सब से उसे ऊब होने लगी, फिर उसमें प्रतिक्रिया पनपने लगी। क्योंकि वह अतुल के लिए नुमाइश की वस्तु बनकर या मेहमाननवाजी का साधन बनकर रहना नहीं चाहती इसे वह अपना अपमान समझकर विरोध करती है। इसी अपमान के आवेश में वह एक दिन अतुल से साफ साफ कहती है - " या तो तुम अपना रवैया बदलो या मुझे मुक्त कर दो।"[१] अतुल उसे अपनी व्यस्तता का कारण बताता हुआ कहता है कि, "वसु सुनो। मैंने तुम्हारे लिए सारी सुविधा जुटा दी है। तुम्हें और क्या चाहिए.... क्या कमी है तुम्हें....।"[२] लेकिन वसुधा यह सब नहीं चाहती वह अतुल को जवाब देती है, "किसी सजी हुई अलमारी में डेकोरेशन पीस बनकर रहना कोई जिन्दगी नहीं है अतुल।....मुझे तुम्हारे हजारें लाखों में कोई दिलचस्पी नहीं है।"[३]

आखिर वसुधा ने अतुल का ऐश्वर्य तो नहीं चाहा था। वह एक पुरूष की निष्ठा को, उसके प्यार को चाहती है। स्वाभिमान के साथ अपने अस्तित्व को बनाये रखना चाहती थी और इसी स्वतंत्र अस्तित्व या स्वाभिमान की रक्षा के लिए ही वह अतुल के ऐश्वर्य को ठुकरा देती है और अपने पावों पर खड़ी होती है।

३:३:१:२:२ <u>आर्थिक स्वतंत्रता</u> :-

वसुधा आर्थिक रूप से स्वतंत्र नारी है। वह अपने पति का घर छोडकर इन्दिरा एक्सप्रेस में पत्रकार की नौकरी करती है और "वर्किंग वीमन्स हॉस्टल" में रहती है। अर्थाभाव न होने के कारण वह अपनी सुविधाएँ जुटा सकती है। वह नौकरी करती है अतः आर्थिक दृष्टि से उसे भविष्य की कोई चिन्ता नहीं है।

३:३:१:३ <u>अपनापन चाहनेवाली नारी</u> :-

विवाह विच्छेद के बाद वसुधा अकेली हो जाती है इसी कारण जो भी उसके सम्पर्क में आता है वह ऊपरी अपनापन दिखलाता है और वसुधा उसे अपना शुभचिंतक मान लेती है और

---

१. डॉ.देवेश ठाकुर : "अन्ततः" - पृ.६६
२. - वही - - वही - - पृ.६६
३. - वही - - वही - - पृ.६६

उसकी ओर आकर्षित हो जाती है। यही उसकी सबसे बड़ी कमजोरी है। उसकी इस कमजोरी को लेकर सुभाष उसे कहता है,- "क्योंकि तुम अकेली हो जो भी तुम्हारे सम्पर्क में आता है। जो तुमसे थोड़ा सा अपनापन दिखलाता है..... चाहे वह दिखलाना ऊपरी ही क्यों न हो, तुम उसके लिए बहने लगती हो। तुम समझने लगती हो कि यह व्यक्ति मेरा शुभचिंतक है। लेकिन वसुधा ऐसा नहीं होता, नाइन्टी नाइन परसैंट ऐसा नहीं होता। असली शुभचिंतक हजारों लाखों में एक होता है।..... तुम हर सम्पर्क में आए व्यक्ति से अपनापन जतलाने लगती हो। इससे समझती हो तुम्हारा अकेलापन कम हो जाएगा। लेकिन इससे वह बढ़ता ही है, कम नहीं होता।"[१]

वसुधा अपनी कमजोरी के कारण ही अकेली जी नहीं सकती। एक बार पंकज पसरीचा उसे कहते भी हैं, "तुमने कई बार कहा है कि तुम अकेली चल सकती हो लेकिन तुम्हें हमेशा दूसरों द्वारा मार्गदर्शन की अपेक्षा बनी रहती है। कई बार तुमने पुरूष जाति को पशु कहा है फिर भी पुरूषों के बीच में बने रहना तुम्हें अच्छा लगता है।"[२]

३:३:१:४ संवेदनशील नारी :-

वसुधा संवेदनशील नारी है। अतुल के साथ अपने प्रेम-प्रसंगों की यादों को समेटे हुए भी वसुधा स्वयं से प्रणय के प्रति अधिक जागरूक दिखाई देती है। उसे अपने पुत्र अविनाश के भविष्य और उसके सुख-दुःख की चिन्ता नहीं है। अन्तर्द्वन्द्व के दायरे शीर्षक में वह अपने अवचेतन मन में पंकज पसरीचा से बातें करती हुई कहती है कि, "मेरी मजबुरी और परिस्थिति दूसरे संदर्भों में हो सकती है। सामाजिक और व्यक्तिगत संदर्भों में। लेकिन समर्पण का सम्बन्ध तो मन से होता है....। और मन में ...। ठीक है, वहाँ कभी अतुल था लेकिन अब कोई नहीं है....।"[३] शारीरिक रूप से वसुधा राघवन के प्रति समर्पित हो चुकी है और मानसिक रूप से पंकज एवं सुभाष की ओर आकर्षित होती है। सुभाष को सही रूप में जाने-पहचाने बिना ही उसके नटखट, सुन्दर, हँसमुख व्यक्तित्व की ओर आकर्षित होती है तब शालिनी उसे कहती है, -

---

१. डॉ.देवेश ठाकुर : "अन्ततः" - पृ.९०
२. - वही - - वही - - पृ.१४०
३. - वही - - वही - - पृ.९७

" तू अकेली है। बहुत सेन्टिमेंटल भी। तुने उसका बाहरी रूप देखा है। बाहर ऐसे सभी मर्द आकर्षित करते है।.... तेरा भय मैं जानती हूँ। तुझे पुरूष चाहिए। यह नेचुरल है।.... तुझे ऐसा पुरूष चाहिए जो बिल्कुल तेरा बनकर रहे।.... जिसके मन में तेरे लिए आकर्षण नहीं हो। और मैं कहूँ, सुभाष उसमें फिट नहीं बैठता।"[१]

३:३:१:५ <u>विवश तथा कमजोर नारी</u> :-

वसुधा पति से अलग होकर हॉस्टल में रहती है तब वह अपने आपको असुरक्षित महसूस करती है। इस मुसीबत की घड़ी में कार्यालय में काम करनेवाले पूर्व परिचित राघवन से वसुधा कुछ अधिक ही जुड़ जाती है। राघवन हर तरह से उसकी सहायता करता है और उसकी कमजोरी का फायदा भी उठाता है। वह वसुधा की सहायता से नया फ्लैट लेना और साथ ही उसके संवेदनशील सहज यौवन का भी आनन्द लेना चाहता है। राघवन के मनोभाव को वसुधा न जानती हो ऐसा नहीं है। विवशता और अपनी कमजोरी में ही वह उसका संग-साथ निभाती चलती है। "समय और परिस्थितियाँ कितनी बदल गयी है। आज उसे राघवन की छेड़छाड़ सहन करनी पड रही है। आज वह यह सब नहीं चाहती लेकिन यह सब हो रहा है। और वह सह रही है।"[२] क्योंकि राघवन के उपकारों का बोझ उस पर है। वह उस बोझ से कैसे मुक्त हो सकती है। उसके आगे कोई रास्ता नहीं है और उसमें इतना साहस भी नहीं है कि सर उठा कर अकेली खड़ी हो सके। "असुरक्षा का भाव पोर-पोर में समाया हुआ है। कोई आधार चाहिए। राघवन है तो चलो राघवन ही सही। क्या ले लेगा मुझसे। जो है, वही तो। लेने दो।"[३]

वसुधा आधार और सुरक्षा के अभाव के कारण ही अकेलेपन से डरती है। इसका उल्लेख लेखक ने "आधार का असमंजस" शीर्षक में किया है। वसुधा शालिनी से कहती है, "कुछ समझ नहीं आता शालू। इतने साल बाद भी अकेले जीने की आदत नहीं बन पायी है। जीने का साहस नहीं हो पाता।"[४]

---

१. डॉ. देवेश ठाकुर : "अन्ततः" - पृ.१०२
२. - वही - - वही - - पृ.५५
३. - वही - - वही - - पृ.५५
४. - वही - - वही - - पृ.१०४

३:३:१:६ अनिश्चय का शिकार नारी :-

प्रेमविवाह की असफलता वसुधा को इस पुरूष प्रधान समाज में अनेक अवसरों पर एक ऐसे चौराहे पर खड़ा कर देती है, जहाँ वह अनिर्णय की स्थिति में लगातार मानसिक पीड़ा और अनिश्चय का शिकार होती रहती है। उसे भारतीय परिवेश में पले-बढ़े संस्कार कोई निर्णय लेने से रोकते है। वह स्वयं कहती है, "हो सकता है इसमें मेरे संस्कारों का हाथ हो, हो सकता है, मेरी हीन भावना या कमजोरी निर्णय लेने में आड़ी आती हो।"[१] आगे वह अपने मध्यवर्गीय संस्कार तथा परिवेश के बारे में कहती है, "संस्कार और परिवेश ही ऐसा रहा है मेरा जहाँ कभी मैंने अपने लिये कोई निर्णय नहीं लिया। दूसरे निर्णय सुनाते रहे और मैं उन निर्णयों के इशारे पर चलती रही। मेरी जिंदगी दूसरे जीते रहे और मैं चुप बनी रही। इसी चुप्पी ने मुझे इस चौराहे पर खड़ा कर दिया है कि जहाँ मै अपने अन्तर्द्वन्द्वों में पिसती हुई कण-कण, क्षण-क्षण मिट्टी हो रही हूँ। कभी माता-पिता के निर्णय से बँधी रही। उसे तोड़ने का साहस किया तो अपने पति अतुल के निर्णयों में बंध गयी। उन्हें तोड़ा तो हॉस्टल के इस कमरे में अपनी अकेली जिन्दगी जीने के लिए अभिशप्त हो गयी। शायद इसीलिए इसीलिये अब कोई निर्णय लेते हुये बहुत डरती हूँ।"[२]

इसतरह वह एक ओर अपनी जिन्दगी के बारे में कोई निर्णय लेने से डरती है तो दूसरी ओर वह अपने निपट एकाकीपन और पुरूष की लोलुप दृष्टि दोनों से आहत होती चलती है और अन्तर्मनमें भरा खालीपन उसे सही पुरूष की तलाश में भटकाता फिरता है। इस भटकन में वह हमेशा अनिश्चय की स्थिति में रहती है।

३:३:१:७ अन्तर्द्वन्द्व से ग्रस्त नारी :-

वसुधा अस्थिर और असंतुलित चरित्रवाली नारी है। अवचेतन मन में अतुल की यादें समेटे मानसिक रूप से पंकज पसरीचा की ओर आकर्षित और राघवन के प्रति शारीरिक रूप से समर्पित होते हुए भी वह अपनी सहेली के मित्र एन्ड्रयूज के मित्र सुभाष

---

१. डॉ. देवेश ठाकुर : "अन्ततः" - पृ.१११

२. - वही - - वही - - पृ.१११

के प्रति भी आकर्षित हो जाती है। यह वसुधा के चरित्र की अस्थिरता ही तो है। जिसके कारण वह अपना संतुलन खो बैठती है। इसका चित्रण लेखक ने "अतीत के झरोखें" शीर्षक मे किया है -

"वसुधा को नींद नहीं आ रही।

उसका सोचना रूक नहीं रहा। उसका गत-आगत और वर्तमान सब एक दूसरे में गड्डमड हो रहे है। कभी वह सोचती है कि वह कितनी अकेली हो गयी है। उसे लगता है कि उसकी छाया भी उसके साथ नहीं रह गयी है।

कभी उसका अतीत उसे कचोटता है।

कभी आने वाले कल से वह भयभीत हो उठती है।

कभी वर्तमान उसे उद्विग्न बना देता है।

वह सोच नहीं पाती.... वह कैसे जिये।

मिनी टेलिविजन की तरह उसे अपना कद भी छोटा हो गया लगता है।"[१]

वसुधा पसरीचा और सुभाष के बीच चयन के द्वन्द्व में रहती है। एक ओर तो वह खुले व्यवहारवाले सुभाष की ओर आकर्षित है तो दूसरी ओर वह पसरीचा की कर्तव्यनिष्ठा और चिन्तन से प्रभावित होती है। पसरीचा के विचारों और भावनाओं की कद्र करती है और उनकी मित्र बनने के प्रस्ताव पर भी विचार करती है। इस विचार मंथन में लगभग एक वर्ष लगता है। फिर भी वह निर्णय नहीं ले पाती।

"अन्तर्द्वन्द्व के दायरे" शीर्षक में उपन्यासकार ने उसके अन्तर्मन कि व्यथा को व्यक्त किया है। "पद का दायरा। उम्र का दायरा, परिस्थिति का दायरा। संस्कारों का दायरा। स्टेट्स का दायरा। समाज का दायरा। कितने दायरें के बीच आदमी फँसा रूका हुआ होता है। इन सारे दायरों को तोड़ा जा सकता है क्या? और फिर....। इन दायरों को तोड़कर क्या मिलेगा। एक प्रौढ़ व्यक्ति का साथ....। एक वृध्द साहचर्य।"[२]

---

१. डॉ. देवेश ठाकुर : "अन्ततः" - पृ.६०

२. - वही - - वही - - पृ.९५

इसप्रकार न जाने कितने दायरों में फँसी वसुधा लगातार अन्तर्द्वन्द्व में पिसती जा रही है। पूरे उपन्यास में वसुधा अन्तर्द्वन्द्व से ग्रस्त है।

३:३:१:८ निष्कर्ष :-

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि वसुधा एक ऐसी आधुनिक मध्यवर्गीय नारी है जो प्रेमविवाह की असफलता के कारण इस पुरूष प्रधान समाज में लगातार मानसिक पीड़ा और अनिश्चय का शिकार होती रहती है। विवशता और अपनी कमजोरी में ही वह राघवन के घिनौने संग-साथ को निभाती चलती है। अर्थाभाव न होने पर और एक बच्चे की माँ होते हुए भी वह मजबूरी में राघवन की छेडछाड़ को सहती है। वसुधा का पुत्र अविनाश उसके भविष्य का आधार हो सकता है। लेकिन उसे अपने पुत्र के भविष्य और उसके सुख-दुःख की कोई चिन्ता नहीं है।

आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होकर भी वह साहस के अभाव के कारण पुरूष के साहचर्य की अपेक्षा रखती है। अभिलाषा हमेशा दर्द ही देती है। जो एक अनिवार्यता बनकर उसे पुरूषों की शर्तोंपर जीने को बाध्य करती है। पति के विदेश गमन के बाद राघवन, पंकज पसरीचा तथा सुभाष के प्रति मन से या मजबूरी में आकर्षित होना ही उसके अस्थिर चरित्र का लक्षण है। अतः पूरे उपन्यास में अन्तर्द्वन्द्वों से ग्रस्त वसुधा के चरित्र में बिखराव ही दिखाई देता है। इन बिखरावों में भी शुरू से अन्त तक वह पंकज पसरीचा के प्रति समर्पित दिखती है। अन्त में उनकी कर्तव्यनिष्ठा और चिन्तन से प्रभावित वसुधा पसरीचा के साल भर से प्रस्तावित प्रेमबांह के आमन्त्रण को स्वीकार कर लेती है। कारण, जो उसे चाहिए था वह सब-कुछ पसरीचा के व्यक्तित्व और कृतित्व में विद्यमान था। वसुधा बड़े आत्मविश्वास के साथ उनका हाथ थामती है और कहती है, "आपने कहा था न, निर्णय मुझे लेना है....सो मैंने ले लिया है। मैंने ही ले लिया है।"[१]

इसतरह वसुधा अपने अन्तर्द्वन्द्व से मुक्ति पाने में सफल होती है और अन्ततः पंकज पसरीचा का सहारा न चाहते हुए भी स्वयं उनका सहारा बनकर पंकज का हाथ थाम

---

१. डॉ. देवेश ठाकुर : "अन्ततः" - पृ.१५३

लेती है। और राघवन के सड़े-गले, घिनौने सम्बन्ध को त्याग देती है। यहाँ उसकी मानसिक परिपक्वता का परिचय मिलता है। यही उसके चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता है।

३:३:२ <u>पंकज पसरीचा</u> :-

उपन्यास का दूसरा प्रमुख चरित्र मिस्टर पंकज पसरीचा का है। जो कि, "इन्दिरा एक्सप्रेस" के संम्पादक है। वे गम्भीर, शान्त और सम्पादन कार्य में दक्ष है। उन्होंने अपनी एक छात्रा पद्मा से प्रेमविवाह किया था लेकिन शादी के कुछ दिन बाद ही उससे अनबन होने पर पद्मा उन्हें छोड़कर चली भी जाती है। उसके जाने के बाद पसरीचा की लत ड्रिंक्स और सिगार के प्रति हो जाती है। पन्द्रह वर्ष के बाद भी वे अपने और पद्मा के प्रेम सम्बन्धों को भूल नहीं सके। अधिकार, सम्मान, प्रतिष्ठा, सुविधाएँ सबकुछ होते हुए भी उनके भीतर एक गहरा खालीपन एक उदासी छायी रहती है। इसी गहरे खालीपन को भरने के लिए ही वह बिलकुल निःस्वार्थ रूप से एवं स्पष्टता के साथ वसुधा के सामने मित्र बनने का प्रस्ताव रखते हैं, जिसमें उनको सफलता मिलती है।

पूरे उपन्यास में पसरीचा ही एक सशक्त पात्र है जिनके चरित्र में निम्न विशेषताएँ पायी जाती है -

३:३:२:१ <u>सुधी सम्पादक</u> :-

पंकज पसरीचा एक प्रभावी व्यक्तित्व है, जिनमें असाधारण निर्णयक्षमता एवं कुशल कार्यक्षमता पायी जाती है। "इन्दिरा एक्सप्रेस" के सम्पादक पसरीचा अपने सम्पादन कार्य में दक्ष हैं। सम्पादन कार्य में किन किन बातों का ध्यान रखना चाहिए, किन किन बातों को कब छपवाना है इसका बराबर ध्यान रखते हैं। वसुधा से हुई बातचित से इसका पता चलता है। वे वसुधा से कहते हैं;-

"इसे ड्राप कर दो। वहाँ स्त्री-सभा की किसी जिम्मेदार महिला से इण्टरव्यू ले लो। स्त्री सभा अच्छा काम कर रही है, इन परिवारों के पुर्नवास के लिए....। इसे अगले हफ्तों में कभी दे देगें।....तुम एक बात समझ लो वसुधा। सडे मैगजीन के इन पन्नों को

सबसे ज्यादा पढ़ा जाता है। इसलिए यह जरूरी है कि इसमें वे चीजे जायें जो रीडर को दिलचस्प तो लगें हो, उसके काम की भी हों।"[१]

इसतरह पसरीचा उद्देश्य के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं ओर उन्हे सफलता भी मिलती है। रिपोर्टिंग में भाषा का प्रभावी एवं शुध्द होना बहुत ही जरूरी होता है। पसरीचा भाषा की ओर भी पूरी सतर्कता से ध्यान देते हैं, तभी तो वे वसुधा से कहते हैं, "तुम रिपोर्टिंग अच्छी कर लेती हो।... लेकिन भाषा को थोडा मांजना पड़ेगा।"[२] इन्हीं बातों से पसरीचा का दूरदर्शित्व प्रकट होता है।

३:३:२:२ <u>कुशल प्रशासक</u> :-

पसरीचा दूरदृष्टा सम्पादक होने के साथ ही एक कुशल प्रशासक भी है। वे काम को ज्यादा महत्व देते है। इसीलिए ही वे काम में कोई ढ़ील पसन्द नहीं करते। वे किसी भी कार्य को, व्यवहार को कुशलता से करते हैं। अपनी जिम्मेदारियों को तत्पर निभाते हैं। व्यक्तिगत समस्याओं को वे अपने काम में आडे आने नहीं देते। काम के साथ वक्त की पाबन्दी भी रखते हैं। वे वसुधा से कहते हैं, "तुम्हारा अर्टिकल पूरा हो गया ?.....इस सण्डे मैगजीन में वह जाना चाहिये। ....मिड टर्म पोल एनाउन्स होने-वाले है। इसीलिये।.... दो-तीन दिन में न्यूज आ सकती है। दिल्ली से डिस्पैच आया है।"[३] उनकी इस दक्षता के बारे में वसुधा सोचती है, "पसरीचा कब कितने तटस्थ हो जाते है, और कब कितने खुले-खिले, कोई समझ नहीं पाता। वसुधा की समझ में भी नहीं आता। लेकिन इतना वह जरूर समझती है कि उन्हें काम में कोई ढ़ील पसन्द नहीं। अपने व्यक्तिगत सम्बन्धों को वे काम में व्यवधान नहीं बनने देते। शायद यही उनकी सफलता का राज है। शायद इसी से वे वह बन पाये हैं, जो हैं।"[४]

---

१. डॉ. देवेश ठाकुर : "अन्ततः" - पृ.१७
२. - वही - - वही - - पृ.६८
३. - वही - - वही - - पृ.११३
४. - वही - - वही - - पृ.११३

३:३:२:३ कर्तव्यनिष्ठ एवं ईमानदार :-

पत्रकारिता हो या अन्य कोई भी कार्य हो पसरीचा उसे ईमानदारी से पूरा करते हैं। उनका कहना है, - "पत्रकार की जिन्दगी साधना की जिन्दगी होती है। उसके काम करने का कोई समय नहीं होता उसे नींद में भी अपनी स्टोरी में खोये रहना पड़ता है। तभी वह कुछ बन सकता है।"[१] यही विचार उनके कार्य के प्रति निष्ठा और ईमानदारी के संकेत देते हैं। उनके ये विचार वसुधा के सामने इसप्रकार प्रकट हुए है,- "तुम जर्नलिज्म में आई हो तो पूरी ईमानदारी के साथ इसके हर पहलू का अध्ययन करो। एक अच्छा पत्रकार बनने के लिए ईमानदारी संकल्प और भाषा पर अधिकार की जरूरत होती है। और.....। और हिम्मत की भी.....।"[२]

३:३:२:४ चिंतनशील एवं दृढ़ चरित्र :-

पसरीचा गम्भीर, शान्त एवं स्थिर चरित्रवालें हैं। वे चिंतनशील है, उनके चिंतन में विवेक दृष्टि हैं जिसका सुन्दर उदाहरण हमें उनके इन विचारों में मिलता है,"प्यार और वासना में अन्तर होता है। वासना के कीचड़ में मैं कभी नहीं फँसा। मेरे संस्कार ही ऐसे नहीं है। और प्यार.....प्यार मेरे लिए एक निष्ठा है, पूजा है, सही सम्बन्ध है और यह सब नितांत व्यक्तिगत है। और मैं कहूँ, मैंने तुम्हें प्यार किया है। तुम कोई भी निर्णय लो, उससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। जब तक मैं हूँ, मेरे साथ मेरी भावनाओं में तुम भी हो, तुम भी रहोगी।"[३] यही विचार उनके व्यक्तित्व को गरिमा प्रदान करते हैं।

पसरीचा में प्रबल ईच्छा शक्ति है। वे कहते है,"पत्रकारिता का पेशा हो या और कोई, इन्सान में हिम्मत होनी चाहिए और होनी चाहिए एक साफ सुथरी और दृढ़ इच्छा शक्ति.....। इच्छा शक्ति और जिद में फर्क करना भी सीखना है वसुधा। जिद में व्यक्ति का आवेश बोलता है और इच्छा शक्ति में उसकी दृढ़ता, उसकी संकल्प शक्ति .....और यह संकल्प शक्ति हमेशा शुभ होती है।"[४]

---

१. डॉ. देवेश ठाकुर : "अन्ततः" - पृ.७०
२. - वही - - वही - - पृ.६९
३. - वही - - वही - - पृ.१२७
४. - वही - - वही - - पृ.६९

पसरीचा जिस उद्देश को पाना चाहते हैं वही उनका चरम लक्ष्य होता है जिसको पाने के लिए बहुत कुछ गँवाना पड़ता है। इस गँवाने के लिए भी वे तैयार रहते हैं। वे गम्भीरता से विचार करते है, "बहुत बार ऐसा होता है कि इन्सान अपने भीतर की सम्भावनाओं को महसूस नहीं कर पाता। उसके संस्कार, उसका परिवेश उसे अनेक बार उलटी दिशा की ओर ले जाते हैं। कभी हल्की महत्वकांक्षा कभी अपने बारे में पाली गयी गलतफहमियों और कभी अपने चंचल और अस्थिर मन और मानसिकता के कारण वह अपने लक्ष्य को स्थिर नहीं कर पाता और भटक जाता है....। तब उससे कोई उम्मीद नहीं रह जाती। इसलिए अपने संस्कारों और इच्छाओं पर कड़ा पहरा बिठा देना चाहिए....। ताकि वे बाहर जाकर व्यक्तित्व को दूषित न कर सकें। "[१]

इसतरह पंकज पूरे उपन्यास में हर वक्त, हर बातका गम्भीरता से विचार करते दिखाई देते है। किसी कठिनाई में या गम्भीर परिस्थिति में भी वे अपने आपको अस्थिर बनने नहीं देते। पत्नी पद्मा के चले जाने के बाद भी वे विचलीत नहीं होते। वसुधा को मित्र बनाने के निर्णय में भी वे अन्ततक स्थिर बने रहते है। बीमारी के कारण अन्दर से टूट जाने के बाद भी वे उसकी प्रतिक्षा करते हैं। अति भावुक होनेपर भी वे अंततक स्थिर बने रहते हैं यही उनके चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता है।

३:३:२:५ <u>संवेदनशील</u> :-

ऊपर से तटस्थ दिखाई देनेवाले पसरीचा अंदर से बहुत ही संवेदनशील व्यक्ति है। वे पद्मा को देखते ही उसकी ओर आकर्षित होते हैं। "उसके कमल से ताजे मुख पर ही तो रीझ गए थे। तब उनका तीसवाँ साल चल रहा था। .....एक शरणार्थिनी युवती। क्लास में आगे की सीट पर बैठनेवाली....पंकज पढ़ते-पढ़ते उसकी ओर देख लेते तो सारे शरीर में रोमांच हो आता। "[२] इसतरह पद्मा को बहुत प्यार किया था उन्होंने लेकिन शादी के कुछ दिन बाद ही वह पार्टियाँ, क्लब और अपने मित्रों में व्यस्त रहने

---

१. डॉ.देवेश ठाकुर : "अन्ततः" - पृ.७०

३. - वही - - वही - पृ.२२

लगी। उसका यह आचरण पंकज पसरीचा के लिये असहय बन गया। इसके बाद भी वे पद्मा को छोड़ने की पहल स्वयं नहीं करते। "स्मृतियाँ" शीर्षक में लेखक ने उनके विचारों को इस प्रकार दर्शाया है, "पंकज के लिए पद्मा का सौन्दर्य कीचड़ बन गया था ऐसा कीचड़ जिसमें कमल नहीं खिलते कीड़े रेंगते है। जिसको एक दिन उन्होंने अपने मनःप्राणों से भी ज्यादा चाहा था उसे ही वे अपने गले की फाँस महसूस करने लगे थे। लेकिन इन सबके बावजूद अन्तिम निर्णय लेने की पहल वे नहीं करना चाहते थे।"[१] इससे पंकज के चरित्र की गम्भीरता और स्थिरता का पता लगता है।

संवेदनशील पसरीचा वसुधा की ओर भी आकर्षित होते है। उससे निःस्वार्थी रूप से प्यार करने लगते हैं। वे मानवीय भावनाओं से भी परिपूर्ण है। वसुधा का पुत्र अविनाश की बीमारी में वे उसकी सहायता करते हैं। अपने नौकर दानसिंह के प्रति भी उनका मन सहृदय तथा संवेदनशील रहता है।

३:३:२:६ <u>स्पष्टवादी</u> :-

पसरीचा स्पष्टवादी है तभी तो वे वसुधा के सामने मित्र बनने का प्रस्ताव बड़ी शिष्टता के साथ रखते हैं, "मैं तुम्हारे अपने बीच औपचारिकता नहीं चाहता हूँ। और न ही कर्तव्य-भावना मैं हार्दिकता चाहता हूँ। सहज, स्वाभाविक हार्दिकता.....। और स्पष्टता। हमारी अच्छाई-बुराई, गलत-सही एक दूसरे के सम्मुख स्पष्ट हों। वहाँ न कोई बनावट हो, न दिखावा और न ही मजबूरी। और, वसुधा ऐसे रिश्ते न पति-पत्नी के हो सकते हैं, न औपचारिक मित्रों के। जिस रिश्ते की बात मैं कह रहा हूँ.....उसे मैं कोई नाम नहीं दे सकता.....। उसे इससे ज्यादा समझा भी नहीं सकता। लेकिन मुझे यकीन है, तुम मेरी बात समझ गयी होगी।"[२] अपनी मित्रता का अर्थ समझाते हुए वे कहते हैं, "मेरी दृष्टि स्पष्ट है। इसीलिए शुरू में ही मैंने तुमसे सब कुछ कह दिया।"[३]

---

१. डॉ. देवेश ठाकुर : "अन्ततः" - पृ.३६
२. - वही - - वही - - पृ.४५
३. - वही - - वही - - पृ.१२६

३:३:२:७ अपूर्णता का अहसास :-

सम्पूर्णता में भी अपूर्णता के बोध का अहसास पसरीचा को खाए जा रहा है। "रम की घूँट भी काम नहीं आती। सिगार का धुआँ भी नहीं। भीड़ के बीच भी अकेलेपन का अहसास। सारी सुविधाओं के बीच भी भीतर तक बैठी हुई अभाव की कसम। बीस सालों से जमा होता हूआ अभाव। पहले एक दम बौखलाहाट होती थी। अब बौखलाहट नहीं होती। बस, एक चुभन, एक कसक होती है चुभन का कोई बिन्दु नहीं है। नहीं, बिन्दु है। पूरा अस्तित्व ही बिन्दु बन गया है। उपलब्ध सामाजिक सम्मान के योग्य बने रहने, दिखने का दीखावा। कैसी मुसीबत है।"[१] पत्नी पद्मा से अलग हो जाने के कारण उन्हें ऐसा आघात लगा है कि पद, मान, प्रतिष्ठा और अनेक सुविधाओं के होते हुए भी उन्हें जीवन में खालीपन की एक कचोट हमेशा सालती रहती है।

३:३:२:८ अन्तर्द्वन्द्व से ग्रस्त :-

पसरीचा पद्मा के रिक्त स्थान की पूर्ति वसुधा से करना चाहते हैं। अपने गहरे खालीपन को भरने के लिये ही एक दिन पंकज वसुधा के सामने मित्र बनने का प्रस्ताव रखते हैं लेकिन साल भर के बाद भी वसुधा की तरफ से कोई प्रतिक्रिया दिखाई नहीं देती तो वे उदास बन जाते हैं। उन्हें लगता है कहीं वसुधा ने अपना साथी खोज न लिया हो। इसी द्वन्द्व में वे हमेशा रहते हैं। इसका चित्रण लेखक ने "अन्तर्द्वन्द्व के दायरे" शीर्षक में किया है, "आसमान में सूनापन फैला है हवा चुप हो गयी है। नीचे सड़क पर गाडियों का मोनोटोनस शोर है। लेकिन पसरीचा के भीतर एक पराजित होते व्यक्ति का अहसास गड़गड़ा रहा है। एक अपमान और उपेक्षा का भाव। उपेक्षित होने का दर्द। अपेक्षा की अपूर्णता का दर्द। अपेक्षा हमेशा दर्द ही क्यों देती है। व्यक्ति है तो अपेक्षा भी है। फिर यह दर्द ? यह अपूर्णता यह खालीपन....। यह अपने तिरस्कृत होने का अहसास।"[२]

---

१. डॉ. देवेश ठाकुर : "अन्ततः" - पृ.२१

२. - वही - - वही - - पृ.९३

वसुधा की तरह पसरीचा भी प्रेमविवाह की असफलता के कारण अन्तर्द्वन्द्वों से ग्रस्त दिखाई देते हैं। जिसके कारण वे बीमार पडते हैं। इस बीमारी में भी उनका सोचना रूक नहीं रहा है, वे वसुधा की प्रतीक्षा करते हैं, " वे आँखे खोले बिस्तर पर लेटे हैं। एक हल्की-सी उधेड़बुन उनके भीतर मंडरा रही है। बाहरी तौर पर वे शीला से स्थिर है....। लेकिन आँखों में प्रतीक्षा फटी पड़ी है। वैसे उन्होंने निश्चय कर लिया है कि अब वे वसुधा से कुछ नहीं कहेंगे।"[१] वे स्थिर बने रहते हैं। उन्हें अपने निर्णय पर विश्वास है और इसी विश्वास के बलपर ही वे अपने अन्तर्द्वन्द्व से मुक्ति पाने में सफल होते हैं।

३:३:२:९ निष्कर्ष :-

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि, पंकज पसरीचा लेखक के विचारों का प्रतिनिधित्व करता है। जिसके द्वारा लेखक ने कुशल एवं सक्षम सम्पादक के गौरव और गरिमा का निर्वाह करवाया है। पूरे उपन्यास में शुरू से अंततक वे अन्तर्द्वन्द्व से ग्रस्त है लेकिन, फिर भी वे स्थिर दिखाई देते है। अपनी कर्तव्यनिष्ठा और चिन्तन से वसुधा को प्रभावित करते हैं। वे वसुधा के अर्न्तमन को झाँककर उसे अपने मित्र बनने के प्रस्ताव की याद दिलाते हैं और उसके मन की झिझक को दूर करने में सफल होते हैं।

अतः पसरीचा बुढापे में जीवन साथी की तलाश की चाह रखनेवाले हर प्रौढ़ सज्जन मनुष्य का प्रतिनिधित्व करनेवाला पुरूष पात्र है।

३:३:३ अन्य पात्र :-

३:३:३:१ राघवन :-

राघवन "इन्दिरा एक्सप्रेस" में एकाउन्टस् डिपार्टमेंट में कैशियर है। जो कि स्वार्थी, लोलुप और भ्रष्ट चरित्रवाला व्यक्ति है। वसुधा अपने पति का घर छोड़कर जब

---

१. डॉ. देवेश ठाकुर : "अन्ततः" - पृ.१५०

हॉस्टल में रहती है तब राघवन उसकी सहायता करता है और साथ ही वसुधा की कमजोरी का फायदा उठाता है। वह वसुधा की सहायता से नया फ्लैट लेना और उसके संवेदनशील स्वभाव तथा सहज यौवन का आनंद लेना चाहता है।

राघवन वासनासक्त पुरूष है, जो पत्नी कल्याणी के होते हुए भी, जब जब उसे मौका मिलता है वसुधा के यौवन का भरपूर फायदा उठाता है। उसे पिक्चर दिखाने ले जाता है, जहाँ वसुधा के शरीर के साथ छेड़छेड़ करता है। आर्थिक लाभ के लिये कल्याणी भी अपने पति का साथ देती है, यद्यपि उसे राघवन और वसुधा के आन्तरिक सम्बन्धों के बारे में निश्चित रूप से कुछ मालूम नहीं है। राघवन वसुधा से कहता है, "कल्याणी को इसके बारे में कुछ मत बतलाना।"[१]

अपने स्वार्थ के लिए राघवन वसुधा को उपरी अपनापन दिखलाता है। वह कहता है...."मैं तुम्हारा वेलविशर हूँ वसुधा। जानती हो, कितना किया है मैनें तुम्हारे लिए। कल्याणी तक की परवाह नहीं की। मुझे तुम्हारा यह रूखापन अच्छा नहीं लगता....।"[२]

राघवन का हर कार्य, हर व्यवहार पैसों से ही जुड़ा हुआ है। वह हर सम्बन्ध को, मानवीयता को पैसों के मूल्य से ही आँकता है। चाहे वह सम्बन्ध मित्रता के ही क्यों न हो। वसुधा की सहेली शालिनी पर होटल में खर्च किये पैसे वह वसुधा से वसुल करता है।

राघवन को वसुधा का पसरीचा से मिलना-जुलना अच्छा नहीं लगता। उसे भय है कहीं वसुधा उसके हाथ से निकल न जाय। इस दृष्टि से उनको अलग करने की वह कोशिश भी करता है लेकिन उसमें कामयाब नहीं होता। इसप्रकार राघवन अपने स्वार्थ के लिए अपना स्वाभिमान, ईमान तथा स्वत्व बेचनेवाला एक भ्रष्ट चरित्र है।

---

१. डॉ. देवेश ठाकुर : "अन्ततः" - पृ.८२

२. - वही - - वही - - पृ.८२

३:३:३:२ शालिनी :-

सहाय्यक पात्रों में प्रमुख रूप से शालिनी का चरित्र आता है। शालिनी आधुनिक विचारोंवाली शिक्षित नारी है, जो कि बौध्दिक, व्यावहारिक और स्पष्टवादी है। व्यवहारी होने के कारण वह बाहरी दुनिया को बहुत अच्छी तरह से जानती है। वह सुभाष की मीठी-खुली बातों का अर्थ समझती है, इसीलिए वह पुरूष ज्वर से पीड़ित वसुधा को धोका खाने से बचाती है। बड़ी स्पष्टता से वह वसुधा से कहती है, "बाहर ऐसे सभी मर्द आकर्षित करते हैं। यह उनका मैनेरेज्म होता है। .....मेरा कहना तो साफ है। होटलों में पीना, बैठना, गाड़ी में घूम लेना, ऊपरी हँसी-मजाक कर लेना ये सब ऊपरी बातें हैं। और किसी को अपनी जिन्दगी में जगह देना बिल्कुल दूसरी बात है।"[१]

शालिनी एन्ड्रयूज नामक क्रिश्चियन युवक से प्यार करती है। उसके लिए वह अपने घर-परिवार तथा समाज की कोई परवाह नहीं करती। उसने एन्ड्रयूज से प्यार किया है एक इन्सान के नाते बहुत ही गहराई से। वह प्यार के बदले में सिर्फ प्यार ही चाहती है। उसका कहना है, "प्यार एक तरफा नहीं हो सकता। जो ऐसा कहते हैं, बेवकूफी करते हैं या झूठ बोलते हैं। प्यार भी प्यार माँगता है। तभी सच्चा होता है। तभी दूर तक चल पाता है।"[२]

एन्ड्रयूज शालिनी के सामने शर्त रखता है कि माँ-बाप का मन रखने के लिए उसे क्रिश्चियन बनना पडेगा तभी शादी होगी। शालिनी यह शर्त नहीं मानती। वह कहती है, "मैंने इन्सान से प्यार किया है, किसी क्रिश्चियन से नहीं। क्रिश्चियन बनने के लिए नहीं। मैं तो उस इन्सान से प्यार करती रही जो इन्सान था।"[३] इसतरह अगर प्यार के बीच कोई शर्त आती है तो वह दृढ़ता के साथ तोड़ देना चाहती है। "अगर रिश्तों के बीच कोई शर्त आई तो जरूर तोड़ दूँगी शर्ते प्यार को समझौता बना देती है।"[४] और शालिनी प्यार में समझौता या हिसाब किताब करना नहीं चाहती। वह ऐसे इन्सान से प्यार करना चाहती है जो प्यार के बीच सामाजिक रिश्ते, बंधन और शर्तों को न लाता हो। जो

---

१. डॉ. देवेश ठाकुर : "अन्ततः" - पृ.१०२
२. - वही - - वही - - पृ.१४४
३. - वही - - वही - - पृ.१४५
४. - वही - - वही - - पृ.१४५

मन से प्यार करे और मन का प्यार ले। ऐसे इन्सान के लिए वह दुनिया से टक्कर लेने को भी तैयार है, "मैं इन्सान हूँ वसु। चाहती हूँ कोई मुझे इन्सान की तरह प्यार करे। बिना शर्त.....। ऐसे इन्सान के लिए मैं दुनिया से टक्कर लेने को भी तैयार हूँ। लेकिन अगर कोई यह कहे कि उसकी शर्तों के साथ प्यार किया जाय तो ना बाबा, यह मेरे बस की बात नहीं है।"[१]

शालिनी के विचार परम्परा से हटकर क्रांतिकारी विचार है। "प्यार की कोई जाति नहीं होती वसुधा। कोई धर्म नहीं होता। बस दो प्राण एक दूसरे को चाहते है, एक दूसरे की कद्र करते हैं। एक-दूसरे के सुख दुःख का ध्यान रखते हैं। एक-दूसरे के प्रति उनमें विश्वास हैं। वे दोनों एक-दूसरे में जज्ब हो जाते हैं - यही प्यार है। सामाजिकता को लेकर चलनेवाला प्यार-प्यार नहीं होता समझौता होता है.... और समझौते मैंने कभी किये नहीं। इस बार भी नहीं करूँगी।"[२]

इसतरह शालिनी, एन्ड्रयूज और अपने प्यार के बीच कोई समझौता करना नहीं चाहती। आगे वह कहती है " मैं कुछ दिन और इंतजार करूँगी। लेकिन एन्ड्रयूज अगर इसतरह की भद्दी शर्त से बाहर नहीं निकल पाता तो मैं अपना रास्ता बदलने देर नहीं करूँगी।"[३]

अतः शालिनी के माध्यम से लेखक ने उन विचारों को प्रस्तुत किया है जो आधुनिक युग के नयी पीढ़ी की माँग है जिसकी आज के समाज में शुरूआत हो चुकी है। आज अन्तर्जातिय विवाह हो रहे है। पारम्परिक बंधनों को तोड़कर यह एक क्रांतिकारी परिवर्तन है। इन्हीं विचारों पर चलनेवाली शालिनी एक क्रांतिकारी महिला के रूप में हमारे सामने आती है।

---

१. डॉ. देवेश ठाकुर : "अन्ततः" - पृ.१४५
२. - वही - - वही - - पृ.१४५
३. - वही - - वही - - पृ.१४६

३:३:३:३ सुभाष :-

उपन्यास के अन्य पात्रों में शालिनी के बाद गौण पात्र के रूप में सुभाष का चरित्र आता है, जो आधुनिक युवा पीढ़ी के नये विचारों का प्रतिनिधित्व करता है। सुभाष हँसमुख, आकर्षक एवं खुले व्यवहारवाला युवक है। शालिनी वसुधा को जब सुभाष से मिलवाती है तो प्रारंभ में ही वह सुभाष के बाहरी व्यक्तित्व की ओर आकर्षित होती है। सुभाष के बारे में शालिनी वसुधा से कहती है, "हँसमुख है, सुन्दर है, एलीट है, मेनर्ड है। अच्छी कम्पनी है वह।....।"[१]

सुभाष आधुनिक विचारोंवाला है, जो कि हर व्यवहार में खुलापन चाहता है। वह लडकियों से दोस्ती करता है और उनसे हर तरह की आजादी भी लेता है। वह शादी से ज्यादा दोस्ती में विश्वास करता है, "देखो, वसुधा, शादी एक बड़ी जिम्मेदारी की बात होती है। जिम्मेदारी निभाने के लिए बंधना पड़ता है और औरत, वो एक ऐसी चीज होती है, जो पुरूष की भीतर-बाहर की जिम्मेदारियों को रियेलाइज नहीं कर पाती। वह चाहती है कि उसका पुरूष उससे बंधकर रहे। वह चाहती है कि एक बनी-बनायी लीक पर जिन्दगी चलाई जायें। जो मेरे लिए मुमकिन नहीं है।"[२]

सुभाष व्यावहारिक है। वह दुनियादारी को बहुत खुबी से समझता है इसी कारण ही वह वसुधा से कहता है, "देखो, यह दुनिया जिसमें हम रहते हैं, बड़ी क्रूर है। यहाँ कदम-कदम पर छलावे हैं। हमे हमेशा सतर्क रहना चाहिए। और तुम जैसी महिला को तो और भी।"[३]

इसप्रकार विज्ञापन जगत से जुड़ा सुभाष समकालीन समस्याओं के प्रति भी सजग दिखाई देता है। वह बुध्दिजीवी नवयुवक है लेकिन उसमें जीवन के प्रति ठोस मूल्यों का अभाव है। डॉ.रवीन्द्रनाथ मिश्र जी का कहना है, "सुभाष आज की युवा पीढ़ी के

---

१. डॉ. देवेश ठाकुर : "अन्ततः" - पृ.१०२
२. - वही - - वही - - पृ.९०
३. - वही - - वही - - पृ.९०

नये विचारों का प्रतिनिधित्व करता है किन्तु उसके चरित्र में जीवन के प्रति ठोस मूल्यों का अभाव है।"[१]

३:३:३:४ निष्कर्ष :-

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि, डॉ.देवेश ठाकुर ने अपने उपन्यास में पात्रों का सफलतापूर्वक चरित्र-चित्रण किया है। सीमित पात्रों की इस कथा का उद्देश्य स्त्री पुरूष सम्बन्धों की जटिलता को महानगरीय परिवेश में परखना है जो इन पात्रों के माध्यम से सफलता के साथ दर्शाया है।

हम देखते है कि, इस उपन्यास के प्रमुख पात्रों की योजना स्त्री-पुरूषों के सम्बन्धों को परखने के उद्देश्य से हुई है। लेखक ने वसुधा और पसरीचा के माध्यम से प्रेमविवाह की असफलता का बहुत ही कलात्मक ढंग से चित्रण किया है। दोनों भी शुरू से अन्ततक अपने अन्तर्द्वन्द्वों से ग्रस्त है लेकिन अन्त में दोनों अपने भीतर चलनेवाले अन्तर्द्वन्द्वों से मुक्ति पाने में सफल हो जाते हैं। पंकज लेखक के विचारोंका प्रतिनिधित्व करता है और वसुधा आज की शिक्षित नारी वर्ग का। राघवन का चरित्र स्वार्थी, लोलुप और भ्रष्ट है जिसका प्रतिनिधित्व करनेवाले लोग आज के समाज में काफी संख्या में मिलते हैं। उसके माध्यम से लेखक ने आधुनिक युग की विकृत चेतना को प्रस्तुत किया है।

शालिनी परम्परा से हटकर आधुनिक विचारों में विश्वास करनेवाली क्रांतिकारी महिला है। उसके माध्यम से लेखक ने अन्तर्जातीय विवाह पर बल दिया है जिसकी आज के समाज में शुरूआत हो चुकी है। सुभाष बुध्दिजीवी नवयुवक है जो आज की युवा पीढ़ी के नये विचारों का प्रतिनिधित्व करता है किन्तु उसके चरित्र में जीवन के प्रति ठोस मूल्यों का अभाव है।

इसप्रकार प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने स्त्री-पुरूष सम्बन्धों को मद्दय नजर रखते हुए पात्रों का सफल चरित्रांकन किया है। इन पात्रों के चरित्र ही सूक्ष्म एवं संक्षिप्त कथानक

---

१. डॉ. ब्रम्हदेव मिश्र : "पांडुलिपि" - पृ.२२०

को रूपाकार प्रधान करते हैं। प्रमुख पात्रों में व्यथित हृदय और अतृप्ति का निवास है। अतः उनके मानसिक द्वन्द्व को लेखक ने उचित ढंग से प्रस्तुत किया है। इस दृष्टि से "अन्ततः" उपन्यास की पात्र-योजना और उनके चरित्र-चित्रण को सफल एवं सार्थक कहा जा सकता है।

उपन्यास के सभी पात्र उपन्यास में गतिशीलता, रोचकता प्रभावोत्पादकता लाते हुए उपन्यास को उद्देश्य की ओर अग्रसर करते हैं। इन पात्रों को देवेशजी ने अत्यंत सहज सुन्दर शैली में पाठकों तक पहुँचाया है जो पाठकों के मन-मानस में जा बसते हैं और उनकी सहृदयता पाने में सफल होते हैं।

-o-o-o-